नवसारी-गुज.। शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा के अन्तर्गत पब्लिक फंक्शन का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रोहित, पूर्व नगरपालिका प्रमुख अरविंद भाई पटेल, ब्र.कु.गीता तथा अन्य अभियान यात्री।

मनोहर थाना-राज.। ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.मीना। साथ हैं नीतिराज,सरपंच, प्रींसिपल रामजीलाल कोली।

लातुर-महा.। लातुर अर्बन बैंक के मैनेजर बालाराम मंत्री और उनकी धर्मपत्नी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नंदा।

भटिण्डा। भुच्चो मण्डी में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर एस.एच.ओ. हरजीत सिंह को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.शिवानी।

उस्मानाबाद-महा.। भोसले हाईस्कूल में टच दी लाईट प्रोजेक्ट का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए स्वामी सर पर्यवेक्षक, पूर्व अध्यक्ष नंदकिशोर भन्साकी, पत्रकार संघ, ब्र.कु.सुरेखा तथा अन्य।

दूदू-जयपुर। नवरात्री की झांकी अवलोकन अवसर पर सरपंच भटाणा, ब्र.कु. शशि तथा अन्य।

पुण्य कर्म के साथ अहंकार को पनपने न दें

-ब्र.कु. सूर्य

हमें श्रेष्ठ कर्म वा पुण्य कर्म करना बहुत ही अच्छा लगता है। पुण्य कर्म की पूंजी जमा करना, दूसरों को सुख देना, मानव मात्र में यह भाव रहना ही चाहिए । कई बार उच्चतम मार्ग का राही पुण्य कर्म अहंभाव वा स्वार्थ भाव को लेकर करता है, वहां पुण्यकर्म में कांटा पड़ जाता है । हम कैसे सावधानी बरते जो पुण्यकर्म हमें विपरीत समय में काम आये।

एक जगह पढ़ा था कि बुद्ध की ख्याति चीन तक पहुँची थी । चीन के सम्राट 'वू' ने बहुत सारा धन खर्च कर बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार कराया । बौद्ध धर्म ग्रंथ का अनुवाद कराया। सैंकड़ों मठ और विहार भी चीन में बनवाये। हजारों भिक्षुओं ने चीन के हर गाँव में पहुँचकर बुद्ध का संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाया।

एक बार (चौदह सौ वर्ष पूर्व) बुद्ध का एक श्रेष्ठ भिक्षु बोद्धिधर्मी भारत छोड़कर चीन पहुँचा ।

सम्राट को पता चला कि परमज्ञानी बोद्धिधर्मी भी चीन आ रहे है, तो वे स्वयं देश की सरहद तक चलकर बोद्धिधर्मी का स्वागत-सत्कार करने के लिए गये । स्वागत विधि निपटाकर, विश्राम के क्षणों में सम्राट 'वू' ने बोद्धिधर्मी से पूछा-''मैंने इतने सारे मठ, विहार बनवाये, धन खर्च कर बौद्ध धर्म का अनुवाद करवाया, लाखों भिक्षुओं को रोज भोजन देता हूँ । तो मेरे इस पुण्य का फल क्या होगा ?''

थोड़ी - सी भी हिचक के बिना बोद्धिधर्मी ने सम्राट वू से कहा-'' आप सीधे नर्क में जायेंगे। डायरेक्ट टू हेल .....।'' सम्राट यह शब्द सुनकर चकित रह गये । और कहा कि आप कैसी बात करते हैं? मेरे इस पुण्य का परिणाम नर्क? आप मज़ाक तो नहीं कर रहे हैं ना? क्योंकि आज तक दूसरे किसी भी भिक्षु ने ऐसा नहीं कहा। सभी उनकी बहुत महिमा करते थे। ''आप तो महान पुण्य आत्मा हो । ऐसा काम तो आज तक किसी ने नहीं किया है । स्वर्ग में तुम्हारा नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा । परमात्मा की बिल्कुल बाजू में आपका सिंहासन होगा।....'' ऐसी अनेक प्रशंसक बातें उन्हें सुनने को मिली थीं। लेकिन यहां आपसे तो विपरीत सुनने को मिला कि इतना सब पुण्य का फल सीधा नर्क ?- बोद्धिधर्मी की बात सम्राट को पसंद नहीं आई और उसने कहा कि मैं इस बात को नहीं मानता हूँ ।

तब बोद्धिधर्मी ने कहा कि मैं आपके पाप के राज्य में प्रवेश करने से इन्कार करता हूँ। मैं आपकी सरहद के बाहर ही रहूँगा। जिस दिन आपको समझ में आयेगा कि.....'यदि पुण्य भी अहंकार की पुष्टि करनेवाला है तो वह पाप है', उस दिन मैं सहर्ष आपके राज्य में प्रवेश करुंगा ।

मैं आपको, आप जो भी काम करते है उनको छोड़ने की बात नहीं करता । लेकिन उन कर्मों द्वारा आपके मन में जो अहंकार भाव जागता है उसको मैं छोड़ने की बात करता हूँ.....।

जब जीवन अपने शिखर पर होता है तब किसी की बात समझ में नहीं आती। लेकिन मृत्यु के समय निश्चित रुप से वे बातें याद आती हैं। आदमी लोखंड की जंजीर छोड़ने को जल्दी तैयार हो जाता है लेकिन सोने के जंजीर से बंध जाने के बाद छोड़ने की इच्छा होती ही नहीं है।

पुण्य का सम्बन्ध, आप कितना और क्या करते हो, उनसे नहीं होता। अहंभाव के साथ किया गया कोई भी कर्म कर्ता को कमज़ोर करता है और अकर्ता-भाव के अ-नुभव बिना दान या पुण्य करते हैं तो वह पाप बनता है। पुण्य कोई प्राकृतिक कार्य का परिणाम नहीं है। व्यक्ति की आंतरिक स्थिति का एक नाम है और अहंकार रहित होकर व्यक्ति कोई भी काम करता है तो ये पुण्य है।

अपने अहंकार की तृप्ति के लिए इंसान कुछ भी करने को तैयार हो जाता है और दान-पुण्य या धार्मिक सम्बंधित कृत्यों का अहंकार अतिशय सूक्ष्म होता है जो स्वयं व्यक्ति को भी दिखाई नहीं पड़ता या समझ में नहीं आता ।

बोद्धिधर्मी की यह सीधी चोट करने वाली सच बात सम्राट को अच्छी नहीं लगी। वह बोद्धिधर्मी का विरोधी बन गया। उनके साथ बौद्ध धर्म के भिक्षु भी विरोधी हो गये क्योंकि उनको आशा थी कि बोद्धिधर्मी को देख सब खुश होंगे। उनकी पीठ थपथपायेंगे। सम्राट भी उत्सुक था कि बोद्धिधर्मी के आने से काम ज़ोर-शोर से आगे बढ़ेगा। लेकिन हुआ सब उल्टा ।

समय अपनी रफतार से चलता रहा, ऐसे में दूसरे दस साल निकल गये। सम्राट मरणशय्या पर सोया हुआ था। मृत्यु ने उसको चारों ओर से घेर लिया था। उसको बहुत ही भय लग रहा था। विचार और विकार उस पर आक्रमण कर रहे थे। असंतोष, उसके कलेजे को खा रहा था। तब उसे बोद्धिधर्मी की बात याद आई और स्पष्ट समझ में आने लगा कि इतना सारा पुण्य करने के बाद भी उसमें और सामान्य आदमी के मृत्यु में कोई अंतर नहीं है । जितनी अशांति एक सामान्य आदमी में होती है उतनी ही अशांति मुझ में भी है । तब भला यह सब करने का क्या अर्थ ? ऐसी सोच उनके मन को बेचैन कर रही थी।

उन्होंने संदेश भेजा कि बोद्धिधर्मी जहां भी हों वहां से सत्कारपूर्वक यहां ले आइए। मैंने व्यर्थ ही दस वर्ष बरबाद कर दिये। आज मुझे, खुद को भी लग रहा है कि मैं सीधा नर्क में जा रहा हूँ।..... लेकिन बोद्धिधर्मी ने तो देह छोड़ दिया था। उनका आगमन असंभव था। लेकिन देह त्याग करते वक्त उसने संदेश छोड़ दिया था कि आज नहीं तो कभी भी सम्राट 'वू' मुझे याद करेगा।

जब जीवन अपने शिखर पर होता है तब किसी की बात समझ में नहीं आती। लेकिन मृत्यु के समय निश्चित रुप से वे बातें याद आती हैं। मेरी ओर से उन्हें बताना कि—''जीवनभर जो पुण्य किया, पुण्य के लिये सब कुछ किया लेकिन अब मृत्यु के क्षणों में पुण्य को छोड़ देना'' काम बहुत मुश्किल है । आदमी लोखंड की जंजीर छोड़ने को जल्दी तैयार हो जाता है लेकिन सोने के जंजीर से बंध जाने के बाद छोड़ने की इच्छा होती ही नहीं है। पाप तो छूट सकता है लेकिन पुण्य द्वारा इकट्ठा किया हुआ अहंकार जल्दी छूटता नहीं। जंजीर लोखंड की हो या सोने की, जंजीर तो जंजीर ही है। पिंजरा लोखंड का हो या हीरे-मोती से जड़ा, वो तो छूट जाता है लेकिन पसंद वाली बाजू छोड़ने के लिए पूरा सिक्का फेंकना पड़ता है क्योंकि परमज्ञान सदा द्वंद्व से पार है। पाप तो बंधन है ही लेकिन मुक्तिमार्ग की यात्रा के लिए पुण्य का अहंकार भी बाधक बन जाता है, जो खराब के साथ अच्छे का अहंकार भी छोड़ता है, वही परमात्मा के द्वार तक पहुंच सकता है।

तीव्र पुरुषार्थ और ...पेज 6 का शेष

जाता है। इस प्रकार 50 वर्षों में से जो 22 वर्ष रहे थे, उनमें से 7-8 वर्ष तो पुरानी बातों में लग जाने से अथवा गड़े मुर्दे उखाड़ते रहने से उनके और ही कम हो जाते हैं। आगे बढ़ने की बजाय वे पुरानी बातों के कब्रिस्तान खोदे खड़े रहते हैं। यदि 22 वर्षों में से 8 वर्ष इस तरह निकल जायें तब बाकी तो केवल 14 वर्ष ही बचते हैं।

व्यर्थ बातें सुनना और करना

कुछ लोग हमें ऐसी बातें सुनाते हैं जिनसे हमारा कोई मतलब नहीं होता। कुछ व्यक्ति दूसरों से व्यर्थ बातें सुनने का चस्का लेते हैं। जब तक उन्हें इधर-उधर का, किसी के मरने किसी के घायल होने का, किसी को व्यापार में हानि होने, इत्यादि का वे जब तक समाचार नहीं सुन लेते, उन्हें न नाश्ता अच्छा लगता है, न खाना हज़म होता है। मसालेदार बातें सुनने की उनको आदत पड़ जाती है वरना वे महसूस करते हैं कि जीवन में बोरियत है। ऐसे ही ईश्वरीय ज्ञान के मार्ग में कई लोग खाहमखाह दूसरों के पुरुषार्थ के उतार-चढ़ाव, उनके जीवन में ऊंच-नीच इत्यादि की खबर के लिए ऐसे ही तरसते रहते हैं जैसे कई लोग सांध्य-समाचार, दोपहर की खबरें इत्यादि के लिए उत्सुक रहते अथवा क्रिकेट में किसका क्या हुआ, इसके लिए अपने दफ्तर में भी रेडियो ऑन करके सुनते रहते हैं। ज्ञानी को जब समय के मूल्य का पता चलता भी है तब भी वह उसे इस प्रकार गंवा देता है।इस प्रकार यदि 5-6 वर्ष भी उसके कम हो जायें तो 14 वर्षों में से बाकि 9 वर्ष ही शेष रहते हैं।इस प्रकार कुछ और भी कारण हैं जिनमें समय की बहुत हानि होती है। स्थानाभाव के कारण हम उनका यहाँ उल्लेख नहीं कर रहे हैं।